हिन्दी प्रतिष्ठा-पार्ट-2,पत्र-3,(आधुनिक काव्य) खण्ड-ख(तारापथ, की कविता के संदर्भ में) "सुमित्रानंदन पंत संपूर्णता के कवि हैं।" तारापथ काव्य संग्रह की कविताओं के माध्यम से स्पष्ट करें।

----डॉ०-प्रफुल्ल कुमार एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष-हिन्दी विभाग आर आर एस कॉलेज मोकामा पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

"सुमित्रानंदन पंत संपूर्णता के कवि हैं।" ।सौंदर्य चेतना से संयुक्त इस कालखंड में भाषा और शिल्प नयापन लेकर आयी भाषा और शब्दों को बाह्य विधान से अंदर की ओर मोड़ने का काम पंत ने पहली बार किया। उन्होंने अर्थ को अंदर की ओर मोड़कर हिंदी कविता में पहली बार अमूर्त उपनाम और प्रस्तुति विधान तथा अनेक प्रयोगों को सर्वथा एक नया विधान एवं सौंदर्य दिया है। अंदर की ओर लौटने से शब्द स्वयं बंध कर सूक्ष्म कोमल एवं चिकने हो गए साथ ही हिंदी की संपूर्ण शब्द सत्ता और भाषा को एक नया अर्थ संस्कार मिला है। कतिपय विशेषताएं पंत की काव्य रचना के प्रथम काल में उपस्थित होकर प्रथम काल को ही उत्कृष्ट काल बना दिए ।पंत जी ने संवेदना के आरोह अवरोह ,उर्धमुखता और अंतरमुखता के अनुरूप छंदों को चुनकर प्रयोग किया-**" अहे निष्ठुर परिवर्तन**

तुम्हारा ही तांडव नर्तन

विश्व का करूण विवर्तन" परिवर्तन कविता में छंद परिवर्तन देखा जाता है ।सुमित्रानंदन पंत सम्पूर्णता के कवि हैं। प्रत्येक युग का रचनाकार अपनी रचना शीलता और सत्य निष्ठा में तब तक किसी दूसरे बिंदु तक खिसक जाता है जब तक आलोचक उसके बारे में विशेष विचार कसौटी का निर्धारण करते हैं ।कभी यह सतत गतिशीलता का आलोचकों और पाठकों को अपने मूल्यांकन का अवसर प्रदान करता है एवं संघर्षशील और स्वतंत्र चेतना वाले कवि के साथ ही जुड़ा होता है । सुमित्रानंदन पंत का वैभव ऐसा ही कठिन कार्य पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है क्योंकि गतिशीलता और नई दिशाओं को लेकर अपने युग में कवि पंत का व्यक्तित्व जितना विवादास्पद है उतना किसी दूसरे का नहीं ।सुमित्रानंदन पंत का दृष्टिकोण हमेशा से विश्लेषणात्मक और मूल्यपरक रहा है।

कवि पंत ने पल्लव की भूमिका में कविता को परिपूर्ण क्षणों की वाणी कहा है। समय की यह परिपूर्णता कवि की निजी आंतरिक परिपूर्णता से बांधी गई है। यह परिपूर्ण क्षण अपने संपूर्ण भाव सत्ता के साथ कवि के काव्य चिंतन के साथ निरंतर विकसित होते गए हैं। उन्होंने अपनी चेतना के सारे स्तरों को अपनी परिपूर्णता में आत्मसात कर लिया है। उनकी चेतना के स्तरों का एक सूचना क्रम उनके काव्य विकास में देखा जा सकता है ।सौंदर्य चेतना काल में उच्छवास से गुंजन तक की रचनाएं आती हैं। भाषा भाव तथा शब्द शिल्प अंतर उद्बोधन सभी दृष्टियों से अर्थात कविता के बाएं और आंतरिक दोनों उपादान सौंदर्य की खोज है। इस प्रयत्न में प्रकृति प्रेम और आत्म बोधन उपादान बने हैं ।नौका विहार की पंक्तियों को यदि उदाहरण के रूप में लिया जाए तो संध्या के समय का एक वर्णनात्मक चित्र के साथ उसकी गतिशील नौका दिखलाई पड़ती है ।इसमें दूहरे अर्थों का संयोजन है जो पंत जी ने छायावादी काव्य में पहली बार दिया ।इस काल की कविताएं अपने आप में विशिष्ट हैं। इन्हें अंतरंगता की कविता कहना उचित होगा। अकेले पल्लव में 23 संबोधनात्मक कविताएं संकलित हैं।

इसके बाद की कविताओं में भी यह अंतरंगता आती है और शिल्प नयापन लेकर आए भाषा नयी छटा बिखेरी हैं। शब्दों को अंतर की ओर मोड़ने का काम पंत जी ने पहली बार किया। उन्होंने अर्थ को अंदर की ओर मोड़कर हिंदी कविता में पहली बार संपूर्ण उपनाम व प्रयोगों को सर्वथा एक नया विधान दिया है। अंतर की ओर लौटने से स्वयं कोमाल एवं अर्थ संस्कार में बौद्धिक चेतनाएं समाहित हो गई । रश्मिबंध की भूमिका में कवि पंत का कहना

है कि '**अपने भीतर मुझे अधिक नहीं मिला।'** अतः उन्होंने शुद्ध सौंदर्य चेतना के काव्य से बौद्धिक चेतना की काव्य भूमि में प्रवेश किया। पंत जी की इस कालखंड की कविता के मुख्यतः दो सोपान है। युगान्त से शुरू होकर युगवाणी और ग्राम्या तक तथा स्वर्ण किरण से शुरू होकर स्वर्ण धूलि तक । प्रथम सोपान की कविताएं तीखी भाव चेतना के परिवर्तन का संकेत देती है। पंत जी की कविता में आशा और क्रांति की तीव्र इच्छा है। युगान्त की कविताएं इस बात की पुष्टि करती है ।पतझड़ में उन्होंने कहा है- **"द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, हे स्रस्त-ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण,---------- झर-झर अनन्त में हो विलीन।"** इनकी कविताएं पुरातन को परिमार्जित की और विनाश की पृष्ठभूमि पर नव निर्माण का संदेश देती है ।युग की वास्तविकता से पुष्ट कवि के प्रेरणास्रोत का यह परिणाम है। पंत जी का कहना है कि मेरी प्रेरणा के स्रोत निसंदेह मेरे भीतर रहे हैं ।जिन्हें युग की वास्तविकता में सोचकर समृद्ध बनाया है। वे स्वयं को मार्क्सवादी स्वीकार नहीं करते हैं। युगवाणी,ग्राम्या की अधिकांश कविताओं में ग्राम जीवन का सौंदर्य यथार्थ असहाय जीवन और पवित्रता है।– **"खड़ा द्वार पर लाठी टेके वह जीवन का बूढ़ा पंजर, सिमटी उसकी सिकुड़ी चमड़ी। हिलती हड्डी के ढांचे पर।"**कविता की पंक्ति हो या

" पिछले पैरों के बल जैसे कोई चल रहा जानवर, पैशाचिक सा कुछ दुखों से मनुज गया शायद उसमें मर।" स्वर्ण किरण से चलकर वाणी में द्वितीय सोपान संपन्न होता है। स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि,अतिमा, वाणी बौद्धिक चेतना से ऊपर उठकर एक सूक्ष्म अति मानवीय चेतना को ग्रहण की गई है। यह निर्वाण की कविता न होकर समन्वय और सार्थकता और निर्माण की कविता है ।अनुभव का प्रसार यहां पहले की अपेक्षा बहुत अधिक है।

"खेतों में फैला है श्यामल

धूल भरा मैला सा आंचल

गंगा जमुना में आंसू जल

मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी

भारत माता ग्रामवासिनी।" हो या " देख रहा मैं बरफ बन गया बरफ बन गया

बरफ बन गया पत्थराकर जमकर युग युग का"

या "**कहां मढ़ा लाए सोने से अपनी चोंचें सारे कौवे प्यारे कौवे"** और धरती कितना देती है ,भारत माता हो या कौवे, सुवर्णा सर्वत्र कवि की रचना क्षमता और उपलब्धि की दिशाएं स्पष्ट होने लगी। उपलब्धि की इस पृष्ठभूमि पर लोकायतन की रचना हुई है ।

भू चेतनाएं- पंत की रचना शीलता के क्रम में उनकी संपूर्ण अंतर्मुखी और बहिर्मुखी परिणतियां यहां तक आकर एक में समाहित हो गई। सौंदर्य दृष्टि, बौद्धिक चेतना और लोकमंगल की गहरी दृष्टि संयोजित हो गई। एक महान युग दृष्टा के रूप में कवि पंत दिखलाई पड़ते हैं। भागवत काव्य का कथन संपूर्ण रूप से प्रतिफलित दिखाई पड़ता है। "**कविर्मनिषी का कर्तव्य सनातन जीवन मंगल का करना सुख सर्जन" (**लोकायतन से) लोकायतन में आज का संपूर्ण युग जीवन प्रयोग धर्मी काव्य के रूप में उपस्थित है। आज की विकासशील मानव सभ्यता का प्रतिनिधित्व कोई अकेला व्यक्तित्व नहीं कर सकता है। अतः प्रयोग धर्मी कवि पंत ने अतीत की आस्था से चलकर भविष्य की प्रीति तक अनेक विविध विचित्र अदाओं से होता हुआ सर्वव्यापी मंगल भूमि पर प्रतिष्ठित करने का प्रयोग किया है।

उन्होंने आस्था जीवन दुख संस्कृति द्वार से होकर ज्ञान तक पहुंचाने का मार्ग बनाया और चिंतन शीलता का एक संकल्प लेकर संम्पूर्णता तक पहुंचा है। लोकायतन उनके संपूर्ण मानसिक विकास और चिंतन शीलता का एकत्र संकलन है। भू जन चेतना से मंडित उनके काव्य संग्रह- कला और बूढ़ा चांद, किरण, जल वीणा, पुरुषोत्तम राम, पौ फटने से पहले, नई ताजगी, शांति शालीनता लिए हुए है।।**" मैं जल से ही/ स्थल पर आया हूँ**(कला और बूढ़ा चांद) **तुम मेरे हो हां सचमुच मेरे हो"** पौ फटने से पहले के रचनाकाल को पंत जी महासंक्रांति युग कहते हैं ।यह महा संक्रांति उनकी इस काल की सभी कविताओं में अंदर ही अंदर प्रवाहित होती हैं उनकी मंगल बोध की कामना लोकोन्मुखी हो गई है। वह पूर्ण सत्य की ओर अपनी लेखनी मोड़ दिए हैं। सत्य की इसी पूर्णता की साधना सार्वभौमिक शुभेच्छा- "**उतरूंगा में शुभ रही रन भुवन सा जग में नया सांस्कृतिक तंत्र विश्व मानव को देने"** के आधार पर कवि पंत संपूर्णता के कवि हैं।

कल्पना के सत्य को ही सबसे बड़ा सत्य मानने वाले कवि अपने वैभवमयी सौंदर्य चेतना में बौद्धिक चेतना का बीज वपन करके उसे पल्लवित पुष्पित करते हैं तथा लोकमंगल की अंतर कामना से अपने काव्य जगत को सींचते हुए सूक्ष्म चेतना की ओर अग्रसर होते हैं। इस प्रकार वर्तमान के फलक पर भविष्य के नवमानव की परिकल्पना करने वाले पंत निसंदेह संपूर्णता के कवि हैं उनकी काव्य कला उत्तरोत्तर विकसित होती गई है।

*****